1

IAS 2022

छप्पर मरम्मत करने का समय तभी होता है, जब धूप खिली हुई हो।
The time to repair the roof is when the sun is shining.

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

जन-मानस में प्रायः ऐसी शिक्षाप्रद सूक्तियाँ सुनने को मिलती हैं कि- 'का वर्षा जब कृषि सुखानी।', 'अब पछताय होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।' 'कल कभी नहीं आता' (टुमॉरो नेवर केम्स)। ये सारगर्भित सूक्तियाँ जीवन में समय एवं अवसर के महत्व को इंगित करते हुए सही समय पर कार्य को सम्पादित करने की प्रेरणा देती हैं। समय बहुमूल्य है, अनमोल है, सम्पत्ति है परन्तु परिवर्तनशील भी है। कहा भी जाता है समय और ज्वार किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। समय के महत्व को समझे बिना जीवनपथ पर आगे बढ़ना कठिन है। इसी संदर्भ में ऐसा कहा जाता है कि जब मौसम अनुकूल हो, धूप खिली हो तभी छप्पर की मरम्मत भी हो अर्थात् अभिष्ट कार्य की सिद्धि हो और समस्या का निदान हो।

कबीर की वाणी है-

''दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, दु:ख काहे को होय।''

मानव का जीवन समस्याओं, चुनौतियों, अवसर एवं संभावनाओं से युक्त होता है। परन्तु समस्याओं का समाधान, अवसर को पहचानकर, त्वरित अपेक्षित कदम उठाकर, चुनौतियों एवं संभावनाओं के अनुरूप स्वयं को तैयार करने वाला ही जीवनरूपी रणभूमि में सफलता को शिरोधार्य करता है।

एक व्यक्ति भविष्य की समस्याओं का उचित आकलन पहले करके उसकी तैयारी कर सकता है। वह उन सभी संसाधनों का भी उचित प्रबंधन कर सकता है जब धूप खिली हो अर्थात् जब परिस्थितियां अनुकूल हो। लेकिन वहीं जब परिस्थितियां विपरीत हो तब (अर्थात् जब बारिश आदि हो) समस्या का प्रबंधन उचित तौर पर नहीं हो पाएगा, मानसिक स्तर पर तनाव के स्थिति में उस स्थिति को संभालना कठिन होगा साथ ही उस समय की मांग के अनुरूप अन्य कार्यों को भी महत्व देना। अत: उचित परिस्थिति (धूप खिली) में ही छप्पर निर्माण आदि कार्य सम्पन्न हो सकता है। तभी तो आइंस्टीन ने कहा-

''बुद्धिजीवी समस्याओं का समाधान करते हैं, प्रतिभाशाली उससे बचाव का रास्ता खोजते हैं।''

एक अच्छा नेता भी वही होता है जो दूरदर्शी दृष्टिकोण रखते हुए समयानुसार समुचित कदम उठाता है। इसका उदाहरण हम मौर्यकाल से ले सकते हैं। घनानंद के अत्याचारों के विरूद्ध चाणक्य ने समय रहते चन्द्रगुप्त मौर्य को उचित प्रशिक्षण व मार्गदर्शन दिया व समय आने पर मौर्य वंश की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

आधुनिक काल में भी हम इसी विचारशीलता का उदाहरण देखते हैं कि कैसे महात्मा गाँधी ने हर बड़े आंदोलन से पहले सभी को आंदोलन हेतु तैयार किया और जनमानस में राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। अर्थात् जब धूप खिली थी तब छप्पर का निर्माण किया ताकि जब आंदोलन रूपी बारिस हो तो सभी तैयार रह सकें।

महात्मा गांधी के ही शब्दों में-

'भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम आज क्या करते हैं।'

ऐसा ही उदाहरण भारत की आजादी के पश्चात् भी देख सकते हैं। विभाजन की विभिषक पीड़ा के पश्चात् जब भारत स्वतंत्रता के पथ पर बढ़ रहा था तब प्रारम्भ में सुरक्षा रूपी छत की मरम्मत पर ध्यान नहीं दिया गया अर्थात् सुरक्षा ढांचे को मजबूत नहीं बनाया गया और इसी भूल का खमियाजा हमे 1962 के भारत-चीन युद्ध के रूप में उठाना पड़ा लेकिन इसी भूल से भारत ने सीख ली तथा उचित समय के साथ अपनी सुरक्षा रूपी छत की मरम्मत की। इसी तैयारी के साथ 1972 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भारत को सफलता मिली। राइफवाल्डो इमर्सन के शब्दों में-

'जब बिल्कुल अंधकार होता है, तब इंसान सितारे देख पाता है'

बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के कारण उत्पन्न ग्लोबल वार्मिंग और ग्लोबल बॉयलिंग का संकट मानव के भावी जीवन के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है। इसीलिए समय रहते सचेत होकर ग्रीन एनर्जी एवं जीरो कार्बन उत्सर्जन वर अभी से बल

दिया जा रहा है। अगर विश्व के सभी देश इस दिशा में मिल-जुलकर कदम उठाते हैं तो फिर अनेक शहरों और देशों को समुद्र में विलीन होने से रोक जा सकता है। अनुकूल परिस्थिति के साथ कार्य करना ही उचित सीख है। कबीरदास जी के शब्दों में-

''काल करे सो आज करे
आज करे सो अब।
पल में प्रलय होगी,
बहुरि करेगा कब।।''

भारत को प्रत्येक वर्ष बाढ़, सूखा एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है। यदि समय रहते, दूरदर्शी दृष्टिकोण के साथ, रणनीति बनाकर कदम उठाये जाए, संरचनात्मक एवं गैर-संरचनात्मक उपाय किए जाएँ तो फिर इनके दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है, रोका जाता सकता है।

स्वास्थ्य संबंधी अनेक समस्याओं का समाधान समय रहते किया जा सकता है। कैंसर जैसे रोगों का यदि प्रारम्भिक अवस्था में निदान कर दिया जाए तो रोगी को बचाया जा सकता है, वही अत्यधिक देर होने पर समस्याएँ उतनी ही बढ़ती है। कहा भी गया है- **'इलाज से बेहतर रोकथाम होता है।'**

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। यह सही है कि छप्पर मरम्मत करने का सही समय तभी होता है जब धूप खिली हुई हो लेकिन हमें कुछ कार्य बारिश या आपदा के दौरान भी करने होते हैं। यथा आपदा प्रबंधन में आपदा पूर्व के चरण की महत्ता होती है। परंतु आपदा के दौरान भी बचाव एवं राहत कार्य उतना ही जरूरी है। यथा आपदा के दौरान कैसे विभिन्न विभागों में ताल-मेलकर, त्वरित एवं प्रभावी तरीके से कदम उठाते हुए लोगों के जान-माल की रक्षा की जाए।

इसी तरह पुलिस तंत्र को हर परिस्थिति के लिए सुरक्षा तंत्र मजबूत बनाना होता है परन्तु यदि कोई घटना घटित होती है तो उस घटना के अनुरूप उसी समय निर्णय लेकर कार्य करना होता है।

लेकिन उपरोक्त परिस्थितियों में भी पहले की गई तैयारियाँ सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अर्थात् धूप खिलने पर ही छप्पर का निर्माण सही रहता है। तभी तो कहा गया है-

''समय इंसान को सफल नहीं बनाता बल्कि समय का सही इस्तेमाल इंसान को सफल बनाता है।''

अन्ततः हम ऐसा कह सकते हैं कि- *''जिसने किया समय का अपव्यय और दुरूपयोग, हुआ उसका जीवन दुश्वार।*
जिसने की समय की पहचान और सद्पयोग, सफल हुआ वह बार-बार''

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

2

आप उसी नदी में दोबारा नहीं उतर सकते
You cannot step twice in the same river.

बोधगया में बुद्धत्व प्राप्ति के उपरान्त बुद्ध ने शाश्वत सत्य का उद्घाटन करते हुए कहा कि ''सब कुछ परिवर्तनशील है।'' गीता में भी कहा गया है कि ''परिवर्तन सृष्टि का नियम है।'' इसी सत्य को प्रकट करते हुए ग्रीक दार्शनिक हेराक्लिटस कहते हैं कि ''परिवर्तन ही सत् है'', संसार में कुछ भी नित्य नहीं है। इस संदर्भ में उनका कथन है कि ''आप उसी नदी में दुबारा स्नान नहीं कर सकते।'' क्योंकि जब आप दुबारा उस नदी में प्रवेश करते हैं तो आप न आप वो व्यक्ति रहते हैं जो पहले थे ना ही वो नदी समान रहती है। अत: शाब्दिक अर्थ भी यही परिवर्तन के नियम को बताता है। आधुनिक विज्ञान भी जीवन और जगत के मूल तत्व के रूप में वर्तमान में स्वीकृत क्वार्क को अत्यंत सक्रिय मानता है।

दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति, हरेक प्राणी, सभी वस्तुएँ एवं स्वयं ब्राह्मण्ड भी समय के साथ परिवर्तनशील है। परिवर्तन के अलावा इस जगत में कुछ भी स्थायी नहीं है। परिवर्तन स्वयं अपरिवर्तनशील है। परिवर्तन को न मानने वाला स्वयं को और भौतिक वस्तुओं को नित्य और शाश्वत मानकर, उनके प्रति आसक्ति पैदा कर उनके संग्रहण में अपना कीमती जीवन व्यतीत कर देता है। जीवन की अनेक समस्याओं एवं दु:खों का मूल कारण भौतिक आसक्ति ही है। उपरोक्त कथन जीवन में परिवर्तन की सच्चाई को बताकर और परिवर्तन के कारण उत्पन्न अवसर को पहचान कर, उसका सद्पयोग करते हुए सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

सर्वप्रथम हम व्यक्ति विशेष के जीवन चक्र पर गौर करते हैं। व्यक्ति अपने जीवन में बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक का सफर पूरा करता है और अपनी हर अवस्था में वह पुराने अनुभवों व नई परिस्थितियों से सीखकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है अत: हर स्थिति के साथ व्यक्ति में भी परिवर्तन होता है। गोपालदास नीरज जी के शब्दों में-

'जीवन पीछे को नहीं आगे बढ़ता नित्य। नहीं पुरातन से कभी सजे नया साहित्य'

व्यक्ति के साथ-साथ उसके मूल्यों व संबंधों में परिवर्तन आता है। वह अपने आस-पास के वातावरण से सीख कर अपने मूल्यों का विकास करता है। साथ ही अपने रिश्तों में बदलाव का अनुभव करता है और वे रिश्तें जिनमें एक बार परिवर्तन आ जाता है, पुन: वैसे ही रूप में ले लें यह संभव नहीं होता। रहीम जी के शब्दों में-

''रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ परि जाय।।''

ऐतिहासिक संदर्भ में देखें तो प्राचीन काल से आधुनिक काल तक निरंतर परिवर्तन देखने को मिला है। सभ्यताओं के विकास से लेकर, विभिन्न राजवंशों के शासन काल में निरन्तर परिवर्तन होता आया है। राजतंत्र और धर्मतंत्र से लेकर लोकतंत्र तक का सफर निरंतर परिवर्तन के कारण ही संभव हो पाया है।

इसी तरह राजनीति के संदर्भ में देखें तो हमारे राजनीतिक मूल्य हमेशा एक जैसे नहीं रह सकते। उनमें भी निरंतर परिवर्तन होता है तभी तो भारतीय *संविधान* एक *जीवंत दस्तावेज* है। समय के साथ जनता की अपेक्षाओं एवं बदलती चुनौतियों के अनुरूप संविधान में भी सौ से अधिक संशोधन किये गये हैं ताकि उसकी प्रासंगिकता और उपयोगिता बनी रहे। भविष्य में इसमें और संशोधन एवं परिवर्तन की संभावना बनी हुई है। जहाँ प्रारम्भ में मांगे *रोटी, कपड़ा व मकान* तक सीमित थी आज यह *इंटरनेट का अधिकार, निजता का अधिकार* जैसे कई पहलुओं को शामिल कर रही है।

अर्थव्यवस्था में भी समय के साथ परिवर्तन आया है। विनिमय के रूप में वस्तु और भौतिक धन से होते हुए अब डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर हम अग्रसर हैं। पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद व उदारीकरण से कोविड के समय संरक्षणवाद समय के साथ हुए अर्थव्यवस्था में परिवर्तन को ही दर्शाता है। निजी और और सार्वजनिक संबंधों में भी लगातार परिवर्तन दिखाई देता है।

मानव-प्रकृति संबंध में भी परिवर्तन दिखाई देता है। आरम्भ में प्रकृति स्वामी और मनुष्य दास की भूमिका में था। वह प्रकृति के अनुरूप स्वयं को ढालने का प्रयास करता था। औद्योगिक क्रांति के पश्चात् मनुष्य ने प्रकृति को विजित करने का प्रयास किया। पृथ्वी की सबसे ऊंची चोटी एवरेस्ट पर पहुंचकर 'एवरेस्ट विजय' की बात कर बताया की मनुष्य प्रकृति का स्वामी है। परन्तु प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध शोषण और प्रकृति से खिलवाड़ के कारण जब मानव के अस्तित्व पर संकट की बात उभरने लगी तो अब मानव प्रकृति से मित्रता, पर्यावरण अनुकूल विकास और सतत् विकास के पथ पर चलने का प्रयास कर रहा है।

देश की सुरक्षा एवं युद्ध संबंधी संसाधनों में भी परिवर्तन आया है। बड़े पैमाने पर ड्रोन का उपयोग और अत्यंत भयानक बमों को निर्माण और प्रयोग आज यूक्रेन-रूस युद्ध और हमास-इजरायल युद्ध में किया जा रहा है। परम्परागत आमने-सामने की लड़ाई की बजाए उन्नति कोटि के हथियार और संचारतंत्र का इस्तेमाल किया जा रहा है। भारत भी इसीलिए भावी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए अपनी रक्षा रणनीति में व्यापक परिवर्तन कर रहा है। आत्मनिर्भर भारत निर्माण के तहत अब रक्षा क्षेत्र के साथ-साथ अंतरिक्ष तकनीक में भी व्यापक सुधार एवं परिवर्तन का कार्य हो रहा है।

कोविड-19 के बाद जीवनशैली में भी परिवर्तन देखा जा रहा है। स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़ी है। पैसे को केवल संग्रहित करने के बजाए जीवन में उसे खर्च करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। खान-पान को लेकर सतर्कता और योग के प्रति उत्साह में वृद्धि हुई है। कोविड के दौरान हमने अपनी दिनचर्या, काम करने के तरीकों में परिवर्तन लाया जो कि आवश्यक था। दोनों समय (कोविड के पहले व बाद) परिस्थितियाँ एक समान नहीं हो सकती है अतः परिवर्तन आवश्यक है।

सुजाना केअर्सली के शब्दों में- ''अतीत हमें सिखा सकता है, हमारा पोषण कर सकता है, लेकिन यह हमें बनाए नहीं रख सकता। जीवन का सार परिवर्तन है, और हमेशा आगे बढ़ना चाहिए अन्यथा आत्मा मुरझाकर शिथिल हो जाएगी।

कवि वृन्द ने जीवन में जड़ता को त्यागकर निरंतर प्रयास से मूर्खों एवं कठोर पत्थर में भी परिवर्तन को स्वीकार किया है। उन्होनें ठीक ही कहा कि-

'करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान'

अर्थात् बारम्बार अभ्यास करने से मूर्ख भी ज्ञानवान हो जाता है और रस्सी के आते-जाते घिसने से पत्थर भी पर निशान बन जाता है।

इसी तरह समय के साथ कुछ चीजें शाश्वत एवं प्रासंगिक बनी रहती हैं, जैसे- दया, करूणा, प्रेम, सत्य, न्याय, धैर्य क्षमा आदि परन्तु इनके प्रयोग के संदर्भ एवं परिस्थितियों में परिवर्तन आता रहता है।

समय का पहिया निरंतर चलता रहता है और परिस्थितियाँ कभी भी एक समान नहीं रहती है। ऐसी स्थिति में जो समय और परिस्थीति के अनुसार स्वयं को परिवर्तित कर लेता हैं वह अपने अस्तित्व और प्रासंगिकता को बनाये रखता है। डार्विन ने अपने 'सर्वावाइल ऑफ फिटेस्ट' में यही बात कही है। लकीर का फकीर बने रहने और परिवर्तन के सत्य से अनभिज्ञ व्यक्ति को जागृत करने वाला नदी और उसमें प्रवेश संबंधी उपरोक्त कथन जीवन में आसक्तियों का परित्याग कर, जड़ता का क्षय कर, जीवन और जगत की वास्तविक सच्चाई को जानते हुए अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। कबीरदास जी के शब्दों में-

''कहना था सो कह चले,

अब कुछ कहा न जाए।

एक रहा दूजा गया,

दरिया लहर समाए।'

Agila khetee aage-aage, pachhila khetee bhage jage.
अगिला खेती आगे-आगे, पछिला खेती भागे जागे।

जीवनरूपी रणभूमि में वही विकास के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ते हुए अभिष्ट कार्यों की सिद्धि कर सफलता को शिरोधार्य करते हैं, जो बदलते समय, परिस्थिति, माँग और चुनौतियों के अनुरूप पहल करते हुए समुचित कदम उठाते हैं। सही समय के बीत जाने के बाद कदम उठाने वालों के संबंध में कही गयी यह कहावत कि 'अगिला खेती आगे-आगे, पछिला खेती भागे जागे', हमें दूरदर्शी बनते हुए समयानुसार कदम उठाने की प्रेरणा देता है।

कविवर रहीम ने भी जीवन में समय के महत्व को इंगित करते हुए कहा है कि-

''समय लाभ सम लाभ नहिं, समय चूक-सम चूक।
चतुरन चित रहिमन लगी, समय चुक की हुक।।''

अनादिकाल से अब तक सभ्यता एवं संस्कृति के विकास को देखा जाए तो यह प्रतीत होता है कि समकालीन समय में उन्हीं संस्कृतियों का ही पल्लवन, पुष्पन एवं प्रतिष्ठापन हो सका है जिन्होनें समय की मांग को समझते हुए उसी के अनुरूप स्वयं को परिवर्तित एवं परिमार्जित किया है।

मुहम्मद इकबाल ने ठीक ही कहा है कि-

''यूनान ओ मिस्र ओ रूमा सब मिट गए जहाँ से
अब तक मगर है बाकी नाम-ओ-निशाँ हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जमाँ हमारा''

वस्तुतः प्रतियोगिता के इस कठिन दौर में वही आगे बढ़ता है जो संभावनाओं को भाँपकर नई पहल करते हुए कदम उठाता है। एक समय मोबाइल में नोकिया और घड़ी में एचएमटी का बोलबाला था परन्तु समयानुसार निर्णय नहीं लेने और कदम नहीं उठाने के कारण आज ये अपने व्यवसाय में पिछली पंक्ति में खड़े हैं।

चार्ल्स डार्विन की 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट थ्योरी' की बात की जाए अथवा आंइस्टीन के 'सापेक्षता सिद्धांत' सब के मूल में यही अंतर्निहित है कि 'भाग्यवादी व्यक्ति को केवल इतना ही मिल पाता है जितना कर्मठ व्यक्ति छोड़ देता है।'

जीवन एक यात्रा है, इसमें ज्ञान एवं नवाचार रूपी वाहन पर सवार होकर जीवन को सहज, सुगम और बेहतर बनाया जा सकता है। इस संदर्भ में यह कहना समीचीन होगा कि भोज के समय कोंहड़ा नहीं रोपा जाता है अर्थात् आग लगने पर कुआँ खोदने पर समस्या का समाधान नहीं होता बल्कि दूरदर्शितापूर्ण दृष्टिकोण के साथ समय रहते कदम उठाने से ही समस्या का समुचित समाधान सम्भव होता है।

परिवार में बच्चे को यदि प्रारम्भ से ही संस्कार एवं नैतिकता सीखायी जाए तो फिर उसे सभ्य समाज का सभ्य नागरिक और कर्त्तव्यबोध से युक्त मानव बनाया जा सकता है। गलत संगति में पड़ने और आदत बिगड़ने के बाद उसे सीखाना और सुधारना कठिन हो जाता है। 'पछिला खेती भागे जागे' वस्तुतः यही बताता है कि समय पर चूक जाने के पश्चात् भाग्य को दोष देना और पश्चाताप की आग में जलने का ही विकल्प शेष रह जाता है। वस्तुतः आलस्य ऐसी व्याधि है जो मनुष्य को अकर्मण्य एवं भाग्यवादी बना देती है। इससे जीवन में असफलता, निराशा एवं हीनता का भाव पैदा होता है।

लोक जीवन में प्रायः यह कहा जाता है कि लोहे पर तभी प्रहार करें, जब वह गर्म हो। ऐसा करके ही लोहे को मनचाहा आकार दिया जा सकता है। बाद में अथक प्रहार और प्रयास के बाद भी ठण्डें लोहे पर असर नहीं पड़ता। जीवन निर्माण और चरित्र निर्माण के संदर्भ में भी ये बातें लागू होती हैं।

कोविड-19 के दौर में उत्पन्न कठिनाईओं से सबक लेते हुए चिकित्सा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारत लगातार कदम उठा रहा है। इसी का परिणाम है कि पहले जहाँ हम पीपीई किट, वेंटिलेटर, मॉस्क आदि के लिए बाहर के देशों पर निर्भर थे परन्तु आज हम निर्यातक की भूमिका में आ गये हैं। यह हमारे देश की कर्मठता और दूरदर्शिता को ही दर्शाता है।

रक्षा क्षेत्र में वैश्विक उभरती चुनौतियों, तनाव एवं संघर्ष के दौर में भारत अन्य देशों या भाग्य के भरोसे न बैठकर लगातार अपनी उत्पादन प्रणाली और उसकी गुणवत्ता को सुधार रहा है। आत्मनिर्भर भारत अभियान 'पहिला खेती आगे-आगे' को ही साकारित कर रहा है।

अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी इसरो के द्वारा उठाये जाने वाले कदम और पहल दुनिया में भारत की नई पहचान को स्थापित कर रहा है। सबसे कम खर्च पर मंगलयान भेजने की बात हो अथवा चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सबसे पहले अपनी अमिट छाप छोड़ने की बात, भारत नें अपनी अग्र-सोच को परिलक्षित किया है।

21वीं सदी को सूचना का युग कहा जाता है। भारत के वैज्ञानिकों के संचार के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित किए। बात अप्टिकल फाइबर की हो, वाई-फाई अथवा 5G परीक्षण की हो व सुपर कम्प्यूटर की, भारत लगातार कदम उठाते हुए प्रयास कर रहा है ताकि वैश्विक स्तर पर इन सबका लाभ उठाया जा सके।

भारत के 2030 तक विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का अनुमान है। परन्तु ऐसा होना भाग्य के साहरे सम्भव नहीं बल्कि आगे बढ़कर सही कदम उठाने और उनके प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भारत विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला देश है ऐसी स्थिति में यदि समय रहते देश की युवा जनसंख्या को हुनरमंद बनाया जाए, नये स्टार्टअप और कौशल विकास कार्यक्रम के माध्यम से सक्षम बनाया जाए तो फिर निःसंदेह ऐसा लक्ष्य प्राप्त हो जायेगा।

स्पष्ट है कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए भाग्यवादी दृष्टिकोण को छोड़कर, कर्मवादी दृष्टिकोण को अपनाने की महती आवश्यकता है। आज प्राथमिकता इस बात की भी होनी चाहिए कि लक्ष्य सिद्धि के लिए भाग्य भरोसे न बैठकर आशावादी दृष्टिकोण के साथ दृढ़तापूर्वक कदम बढ़ाया जाए। विवेकानन्द के द्वारा कही गयी यह युक्ति हमें जीवन में लक्ष्य प्राप्ति हेतु जागृत कर अभी से कार्य करने की प्रेरणा देती है- **'उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाये।'**

4

''यदि हमें भविष्य को विनाश से बचाना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा'' ("If we want to save the future from destruction then The direction of development will have to be changed.)

पर्यावरण संरक्षण एवं मनुष्य और प्रकृति के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से गठित वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर (WWF) ने 2018 में अपने लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट में कहा है कि-

''हम पहली पीढ़ी हैं, जिसके पास प्रकृति के मूल्य और उस पर हमारे प्रभाव की एक स्पष्ट तस्वीर है। हम अंतिम भी हो सकते हैं, यदि हम इस प्रवृत्ति को पलटने के लिए कार्रवाई करते हैं।''

वस्तुतः यह चेतावनी मानव के उस भौतिकतावादी, संग्रहणवादी प्रवृत्ति, अदूरदर्शिता और अंधाधुंध आर्थिक विकास के दुष्परिणामों को ध्यान में रखकर दी गई है। आज विकास की ऐसी स्थिति है कि-

''जंगल, पेड़, पहाड़, नदी
आदमी सब कुछ काट रहा है।
छील-छील कर खाल भूमि की
कतरा-कतरा बाँट रहा है।
बिना सोचे समझे
अंतहीन विकास की होड़ में
आज मानव शामिल हो चुका है
स्वयं अपने विनाश की अंधी दौड़ में''

मनुष्य की धनलोलुपता की प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर गाँधी जी ने सतर्क करते हुए यह कहा था कि-

''प्रकृति हमारी जरूरतों को तो पूरा कर सकती है
परन्तु किसी मनुष्य के लोभ की नहीं''

18वीं शताब्दी में यूरोप में औद्योगिक क्रांति के पश्चात् बड़े पैमाने पर प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आरम्भ हुआ। उस समय विकास का पैमाना प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की क्षमता से लिया गया। परंतु जल्द ही इसके नकारात्मक परिणाम आने लगे और यह पता चलने लगा कि पृथ्वी पर असीमित प्राकृतिक संसाधन नहीं है। इसके अनियोजित अंधाधुंध दोहन के दो परिणाम संभव हैं-

पहला की प्राकृतिक संसाधनों की कमी से भावी पीढ़ी के जीवन जीने की संभावना प्रभावित हो सकती है। दूसरा, पर्यावरण प्रदूषण भावी पीढ़ी के साथ वर्तमान पीढ़ी को भी संकट में डाल सकता है।

जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण एक तरफ भूजल के अत्याधिक दोहन से भूजल स्तर गिरता जा रहा है तो दूसरी तरफ बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों एवं विषैली गैस एवं धुयें के कारण जल के साथ वायु भी प्रदूषित हो रही है।

जल-प्रदूषण से एक तरफ अनेक जल जनित बीमारियाँ जैसे- हैजा, पीलिया आदि बीमारियाँ बढ़ी हैं तो दूसरी तरफ जलीय जीवों पर संकट मंडराने लगा है।

आज पूरे विश्व में जल-संकट और वायु-प्रदूषण की समस्या उभर कर सामने आ रही है। दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन और भारत में चेन्नई इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। पिछले वर्ष चेन्नई में जल-संकट की विभिषिका को देखते हुए वॉटर-ट्रेन चलाने की नौबत आ गई। ऐसी बढ़ती घटनाएँ चिंता का विषय हैं।

पेयजल, सिंचाई एवं बिजली प्राप्ति हेतु हिमालय के भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों में भी बड़े-बड़े बाँधों का निर्माण किया गया है, जो अब खतरे का संकेत दे रहे हैं।

ग्लोबल-वार्मिंग के कारण वैश्विक जैव-विविधता के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है। फसलों, फूलों एवं फलों का परागण कराने वाली विश्व की कई कीट प्रजातियाँ संकट के दौर में हैं। पुनः बड़े ग्लेशियरों के पिघलने से कई समुद्र तटीय देशों एवं शहरों के विनाश का भी खतरा उत्पन्न हो रहा है।

जंगलों में लगने वाली आग चाहे वह अमेजन के जंगल हो या उत्तराखण्ड के, इन सब ने मानव के विकास की दशा और दिशा पर प्रश्न-चिन्ह उत्पन्न करना शुरू कर दिया है।

बड़े पैमाने पर रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग से भूमि की गुणवत्ता में गिरावट आयी है। उदाहरण ास्वरूप पंजाब में तीव्र गति से कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर रासायनिक उर्वरकों को प्रयोग किया गया जिसके नकारात्मक परिणाम उभर रहे हैं। भूजल प्रदूषण के कारण कैंसर जैसी बीमारियाँ उभर कर सामने आ रही हैं। इसके दुष्प्रभाव का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पंजाब के मालवा क्षेत्र को कैंसर बेल्ट कहा जाने लगा है तथा बठिंडा से बीकानेर जाने वाली ट्रेन को कैंसर ट्रेन कहा जाने लगा है।

आर्थिक विकास की पिछली सदी में उत्पादन में वृद्धि और उत्पाद की बर्बादी दोनों में वृद्धि देखी गई। एक तरफ लाखों लोगों को दो जून की रोटी और पर्याप्त पोषण नहीं मिल पाता तो दूसरी ओर घर, होटल और पार्टियों में अन्न की बर्बादी देखी जाती है। अतः ऐसी खानपान वाली पार्टियों में ऐसे स्लोगन लगाये जा सकते हैं कि-

''उतना ही अन्न लीजिए थाली में
फेकना न पड़े उसे नाली में''

कई बार तो भण्डार गृहों में ही अन्न सड़ने लगता है। यह विकास के विरोधाभास को दर्शाता है। अतः आवश्यकता है कि संसाधनों का समुचित दोहन हो और उनका सुव्यवस्थित आवंटन हो। इस क्रम में संसाधनों का दुरूपयोग करने वालों के प्रति ऐसी कार्यवाही हो कि ताकि जनमानस में सकारात्मक संदेश जाये।

विकास के लिए शांति एवं सामाजिक स्थिरता आवश्यक शर्त है। वर्तमान में वैश्विक स्तर पर उभरते संकट एवं खतरे जैसे- रूस-यूक्रेन युद्ध, हिन्द महासागर में चीन की बढ़ती गतिविधियाँ, इजरायल और ईरान में बढ़ता आपसी विवाद, कोरिया प्रायद्वीप में विवाद, हथियारों की होड़ और इस क्रम में परमाणु युद्ध का बढ़ता खतरा समूची मानवता को खतरे में डाल सकता है। विकास की नई उपलब्धि कृत्रिम-बुद्धि खतरनाक रसायनों एवं हथियारों के विकास में नई भूमिका निभा सकता है जो मानव के समस्त विकास को विराम दे सकता है। अतः आवश्यकता है कि विकास को मानव उन्मुखी बनाया जाए, विनाश उन्मुखी नहीं।

विकास के क्रम में केवल भौतिक निवेश पर्याप्त नहीं है बल्कि इसके साथ-साथ मानव पूंजी में भी निवेश आवश्यक है। शिक्षण, प्रशिक्षण और कौशल विकास के माध्यम से मानव संसाधन को समृद्ध किया जा सकता है। भौतिक निवेश के समुचित उपयोग, जीवन की गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता हेतु मानव पूंजी में निवेश आवश्यक है। पुनः विकास का लक्ष्य केवल आर्थिक विकास जैसे- जीडीपी में वृद्धि आदि ही नहीं होना चाहिए बल्कि विकास के क्रम में सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं पर्यावरणीय मूल्यों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

मनुष्य वास्तव में न तो प्रकृति का दास है और न ही उसका स्वामी। प्रकृति हमारी मित्र है। अतः मनुष्य में प्रकृति के प्रति सहअस्तित्व, संरक्षण, संवर्द्धन, सम्मान, संतुलन एवं सामंजस्य का भाव होना चाहिए। ऐसा तभी संभव है जब लोगों में पर्यावरणीय चेतना जागृत हो और प्रकृति संरक्षण में जनसाधारण की भागीदारी हो। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है-

''जो घर बनाओ तो एक पेड़ भी लगा लेना
परिंदें सारे मोहल्ले में चहचहाएँगे।''

केवल सरकार को दोष देने मात्र से समस्या का समाधान नहीं हो सकता बल्कि हम सबको मिलकर इस दिशा में कदम बढ़ाने होगें।

विकास का लाभ चंद मुट्ठी भर लोगों को न मिलें बल्कि विकास प्रक्रिया में जन-मानस की भागीदारी हो तथा विकास का लाभ जनसामान्य को भी मिले। विकास ऐसा हो जो समानता एवं सामाजिक न्याय को दिलाने में मददगार हो। राष्ट्रकवि दिनकर का भी स्पष्ट कहना है कि-

''शांति नहीं तब तक जब तक,
सुख-भाग न नर का सम हो।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम हो ॥''

विकास को रोकना समस्या का समाधान नहीं है बल्कि विकास की दिशा को बदलना होगा। विकास में मात्रात्मक और गुणात्मक परिवर्तन के साथ-साथ मूल्यात्मक पक्ष को सम्मिलित करना होगा। विकास प्रक्रिया सतत् एवं समावेशी होगी तो ही समाज में शांति, स्थिरता एवं संतुलन की स्थिति उत्पन्न होगी। विकास के मूल में यह मन्तव्य होना चाहिए कि-

''सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः ॥
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।
मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत॥''

5

"जो बदलाव आप दूसरों में देखना चाहते हैं, पहले स्वयं में लाइए" — गाँधी जी
"Be the change you want to see in others" — Gandhi ji

KGS

नैतिकता के निर्धारण और मार्गदर्शन करने वाला स्वार्णिम नियम है कि जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा हम औरों से करते हैं वैसा ही व्यवहार हमें दूसरों के प्रति करना चाहिए। दूसरों की निंदा, आलोचना, कमी निकालने या अपेक्षा पालने मात्र से वास्तविक परिवर्तन और सुधार नहीं हो सकता बल्कि स्वयं इस दिशा में आगे पहले करते हुए बढ़ने पर धीरे-धीरे अनुकूल परिणाम भी आने लगता है। गाँधी जी भी इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि पहले स्वयं में बदलाव लाइए तत्पश्चात् अपेक्षित बदलाव औरों में भी आने लगता है। आशय है कि जिन मूल्यों एवं कर्त्तव्यों के पालन की अपेक्षा हम औरों से करते हैं वैसा कार्य एवं वैसे पथ का अनुगमन पहले स्वयं करना होता है।

महात्मा गाँधी ने जीवन में सत्य एवं अहिंसा के अनुपालन का न केवल संदेश दिया बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी इसे धारण करते हुए 'सादा जीवन उच्च विचार' को साकारित करते रहे। परिणामस्वरूप जो भी उनके सम्पर्क में आया उसके ऊपर भी गाँधी के व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ा।

वर्तमान समय में हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी बाते बोलने वाले वक्ता मिल जाते हैं जो धाराप्रवाह एवं प्रभावी ढंग से बात कहने में माहिर होते हैं किंतु वास्तविकता यह है कि बहुत ही कम ऐसे लोग हैं जो स्वयं उन बातों पर अमल करते हैं जिन्हें वे सार्वजनिक तौर पर व्यक्त करते हैं। ऐसे ही लोगों के बारे में यह कहावत प्रचलित है- 'हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और'। दरअसल यह दोहरे व्यक्तित्व का परिणाम होता है अर्थात् ऊपर से कुछ दिखावा किया जाता है और वास्तविकता कुछ और ही होती है।

लोग दूसरों की कमियां गिनाने में लगे रहते हें किंतु कभी भी अपनी कमियों पर गौर नहीं करते हैं। वे दूसरों को बदलने का प्रयास करते हैं किंतु जब स्वयं को बदलने की बात आती है तो पीछे हट जाते हैं। इसे ही अभिव्यक्त करते हुए कबीर कहते हैं कि-

''बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा न कोय।।''

इस संदर्भ में गालिब की ये पंक्तियाँ प्रासंगिक हैं कि-

जिंदगी भर गालिब भूल यही करता रहा,
धूल चेहरे पर थी, आइना साफ करता रहा।।

यहाँ महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि हम बदलाव क्यों चाहते हैं और किस प्रकार का चाहते हैं? दरअसल बदलाव या परिवर्तन हम इसलिए चाहते हैं क्योंकि मन, बुद्धि एवं व्यवहार में लगातार सुधार से हम श्रेष्ठतम स्थिति में पहुंचते हैं। इससे न सिर्फ स्वयं का कल्याण होता है बल्कि इससे उन लोगों का भी भला होता है जो हमसे जुड़े होते हैं। किसी ने सही ही कहा है **"हम बदलेंगे तो युग बदलेगा।"**

किंतु विडम्बना यह है कि हम बदलाव तो अच्छी दिशा में चाहते हैं किंतु जब बात स्वयं में बदलाव लाने की होती है तो हम हिचकिचाते हैं। उदाहरण के तौर पर भ्रष्टाचार से सभी त्रस्त हैं और इसे समाप्त करना चाहते हैं किंतु जब भी भ्रष्टाचार की बात होती है तो वे दूसरे के घर से शुरू करके इसे दूसरे के घर में ही समाप्त कर देते हैं।

लोग अक्सर राजनेताओं की शिकायत करते हैं, अपने असंतोष को व्यक्त करते हैं परन्तु जब वोट देने की बारी आती है तो उम्मीदवार के चरित्र और आचरण पर ध्यान न देकर जाति, धर्म और व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित होकर मतदान करते हैं।

वस्तुतः प्राकृतिक रूप से मानव की यह प्रवृत्ति होती है कि वे दूसरों को बड़ी आसानी से उपदेश एवं शिक्षा देते हैं किंतु जब बात स्वयं अमल करने की होती है तो कदम पीछे हटा लेते हैं। ठीक ही कहा गया है–

''पर उपदेश कुशल बहुतेरे,
जे आचरहिं ते नर न घनेरे॥''

अर्थात् दूसरों को कर्तव्य पालन की सीख देने वाले बहुत मिल जाते हैं, लेकिन स्वयं अपने ही दिये उपदेश का आचरण करने वाले बहुत ही कम व्यक्ति देखने को मिलेंगे। वैसे भी दूसरों को उपदेश देना बहुत ही सरल कार्य है, लेकिन इन उपदेशों को व्यवहार में लाना बहुत ही कठिन होता है। समाज में अधिकांश लोग उपदेश देना जानते हैं, किन्तु उन पर स्वयं कभी भी अमल नहीं करते।

घर-परिवार में बच्चों को नैतिक शिक्षा देने का सही तरीका उपदेशात्मक न होकर व्यवहारात्मक है। बच्चे माता-पिता और घर के अन्य सदस्यों के आचरण को देखकर उनका अनुसरण एवं अनुकरण कर सीखते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों को बोलकर या डाँटकर अच्छे आचरण की अपेक्षा नहीं की जा सकती बल्कि इसके लिए स्वयं भी तद्नुरूप आचरण करना होता है।

व्यक्ति जो भी सही या गलत आचरण करता है, वह धीरे-धीरे अभ्यास के फलस्वरूप आदत का रूप ले लेती है। आदत से ही चरित्र का निर्माण होता है। चरित्र के अनुसार व्यक्ति सामान्यतः जीवन में आचरण करता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति के आचरण एवं व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ-साथ सद्कर्मों को निरन्तर अभ्यास आवश्यक है। इस संदर्भ में स्वाध्याय, सद्संगति के साथ-साथ कर्त्तव्यबोध का होना आवश्यक है।

यदि हम ऐसा कर सके तो निश्चित तौर पर हम अपने समाज, अपने देश एवं विश्व तक को परिवर्तित करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेंगे। अंततः स्वयं में एवं अन्यों के व्यवहार में सकारात्मक बदलाव का आह्वान करते हुए कबीर के शब्दों मे ऐसा कह सकते हैं कि–

''जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोओ तू फूल।
ताहि फूल को फूल हैं, वाको हैं तिरसूल॥''
ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोये।
औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होए॥